रोज़ाना एक गोली से एड्स की रोकथाम

एक अनुमान के मुताबिक एड्स प्रतिदिन 5000 लोगों की जान लेता है। अब कुछ प्रयोगों से यह आशा जगी है कि दवाइयों की मदद से इस बीमारी की रोकथाम संभव है।

हाल ही में जो अध्ययन पूरे हुए हैं उनसे एड्स की रोकथाम में एंटी रिट्रोवायरस (एआरवी) दवाइयों की नई भूमिका उजागर हुई है। इस संदर्भ में दो अलग-अलग तरीके सामने आए हैं।

अफ्रीका में अलग-अलग स्वतंत्र रूप से काम कर रहे दो समूहों ने पाया है कि यदि असंक्रमित विपरीतलैंगिक (यानी जो समलैंगिक नहीं हैं) व्यक्तियों को प्रतिदिन एआरवी दवाइयों की सामान्य से कम खुराक दी जाए, तो उनमें एचआईवी संक्रमण होने का खतरा 63-68 प्रतिशत तक कम हो जाता है। रक्त में एआरवी की थोड़ी-सी मात्रा सतत रूप से बनी रहे तो एचआईवी के पनपने से पहले ही वे मार दिए जाते हैं। यह तरीका स्त्री-पुरुष दोनों में कारगर पाया गया है। इस विधि को संपर्क-पूर्व औषधि रोकथाम कहा गया है।

दूसरे अध्ययन में जो तरीका अपनाया गया था उसे उपचार-सह-रोकथाम कह सकते हैं। इसमें संक्रमित लोगों को सामान्य से थोड़े समय पहले से ही एआरवी दवाइयां देना शुरू कर देते हैं - इससे पहले कि एचआईवी उनकी श्वेत रक्त कोशिकाओं को बड़ी संख्या में नष्ट कर पाए। इस अध्ययन में 13 देशों के 1763 विपरीतलैंगिक युगलों में अपेक्षाकृत जल्दी एआरवी देने से एचआईवी के प्रसार में 96 प्रतिशत की कमी आई। यानी इन व्यक्तियों से असंक्रमित व्यक्तियों को एचआईवी का प्रसार न के बराबर हुआ। अध्ययन के नतीजे इतने उत्साहवर्धक थे कि इसे बीच में ही रोककर तुलना समूह (जिन्हें औषधि नहीं दी जा रही थी) को भी उपचार देना शुरू कर दिया गया।

इन दोनों अध्ययनों का आशय यही है कि एआरवी दवाइयां या तो संक्रमण से पूर्व दी जाएं या संक्रमण हो जाने पर थोड़ी जल्दी शुरू कर दी जाएं, तो असंक्रमित आबादी को संक्रमण से बचाया जा सकता है। दोनों विधियों के मिले-जुले इस्तेमाल से शायद एड्स एक दुर्लभ बीमारी बनकर रह जाएगी।

मगर दोनों ही तरीकों में एआरवी दवाइयों की भारी मात्रा की ज़रूरत होगी, और वह भी सस्ती दरों पर। फिलहाल एआरवी काफी महंगी दवा है।

एक समस्या यह भी है कि यदि आप सारे असंक्रमित लोगों को प्रतिदिन यह दवा देते हैं, तो संक्रमित व्यक्तियों के लिए क्या बचेगा। इसके अलावा इतने व्यापक इस्तेमाल से दवा के खिलाफ प्रतिरोध उत्पन्न होने की समस्या से भी इन्कार नहीं किया जा सकता। एक समस्या यह भी है कि जहां बीमार लोग ही दवा लेना भूल जाते हैं, वहां यह उम्मीद कैसे की जा सकती है कि अच्छे-खासे स्वस्थ लोग प्रतिदिन गोलियां लेते रहेंगे। ***(स्रोत फीचर्स)***